

विविधता में एकता और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (UNITY IN DIVERSITY AND NATIONAL EDUCATION POLICY 2020)

***डॉ. नरेश कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर**

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली (भारत)

Article Received: 23 August 2026

Article Revised: 11 September 2026

Published on: 01 October 2026

*Corresponding Author: डॉ. नरेश कुमार

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
(भारत)

DOI: <https://doi-doi.org/101555/ijrpa.7764>

सारांश- भारत की बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और बहुधार्मिक संरचना “विविधता में एकता” की अवधारणा को विशेष महत्व प्रदान करती है। यह अवधारणा भारतीय समाज की पहचान होने के साथ-साथ लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक समरसता की आधारशिला भी है। प्रस्तुत लेख में “विविधता में एकता” की अवधारणा को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विशेष संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। प्रस्तुत लेख में यह स्पष्ट किया गया है कि भारत में भाषाई, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, क्षेत्रीय और ज्ञान परंपराओं की विविधता होने के बावजूद एक साझा राष्ट्रीय चेतना विद्यमान है और इस एकता को सुदृढ़ करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को समावेशी, बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और बहुविषयक बनाकर विविधताओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करती है। लेख में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए यह बताया गया है कि नीति का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं; अपितु विद्यार्थियों में सामाजिक संवेदनशीलता, लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करना है। इस संदर्भ में बहुभाषिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश और समावेशी शिक्षा जैसे प्रावधानों को विविधता में एकता को मजबूत करने के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया है। बहुभाषिक शिक्षा विद्यार्थियों को अपनी भाषा और संस्कृति से जोड़ते हुए अन्य भाषाओं के प्रति सम्मान विकसित करती है; जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता और राष्ट्रीय गौरव की भावना को सुदृढ़ करता है। समावेशी शिक्षा विभिन्न पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों को एक साथ सीखने का अवसर प्रदान कर सामाजिक समरसता को बढ़ावा देती है।

प्रस्तुत लेख में मूल्य आधारित शिक्षा, स्थानीय से वैश्विक दृष्टिकोण, बहुविषयक शिक्षा तथा कला, संस्कृति और खेल के समावेश को भी विविधता में एकता के विकास के महत्वपूर्ण आयामों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से लोकतंत्र, समानता, न्याय, सहिष्णुता और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों का विकास होता है जिससे विद्यार्थी विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के प्रति सम्मानपूर्ण दृष्टिकोण अपनाते हैं। स्थानीय से वैश्विक दृष्टिकोण विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए वैश्विक नागरिकता की भावना विकसित करता है। बहुविषयक शिक्षा और सह-शैक्षिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों में व्यापक दृष्टिकोण, सहयोग और सामूहिक पहचान को सुदृढ़ करती हैं। विद्यालयी शिक्षा में बहुभाषिक कक्षा वातावरण, सांस्कृतिक उत्सव, सहयोगात्मक अधिगम, अनुभवात्मक शिक्षण और समावेशी पाठ्यपुस्तकों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है। साथ ही शिक्षक की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है जो समावेशी वातावरण निर्मित कर विद्यार्थियों में विविधता के प्रति सम्मान विकसित कर सकते हैं। लेख में बहुभाषिक शिक्षकों की कमी, संसाधनों का अभाव, क्षेत्रीय असमानताएँ, सांस्कृतिक पूर्वाग्रह और पाठ्य सामग्री की कमी जैसी चुनौतियों की भी चर्चा की गई है तथा उनके समाधान के रूप में शिक्षक प्रशिक्षण, समावेशी पाठ्यक्रम, स्थानीय संसाधनों का उपयोग और समुदाय की भागीदारी पर बल दिया गया है। अंत में निष्कर्ष रूप में यह प्रस्तुत किया गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विविधता में एकता की भावना को सुदृढ़ करने का व्यापक और दूरदर्शी ढाँचा प्रदान करती है। यदि नीति का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए तो शिक्षा प्रणाली ऐसे संवेदनशील, लोकतांत्रिक और वैश्विक नागरिक तैयार कर सकती है जो विविधताओं का सम्मान करते हुए समावेशी और समरस समाज के निर्माण में योगदान दें।

मुख्य शब्द- विविधता में एकता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समावेशी शिक्षा, बहुभाषिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा. सांस्कृतिक विविधता, मूल्य आधारित शिक्षा, लोकतांत्रिक मूल्य, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, वैश्विक नागरिकता

प्रस्तावना

भारत विश्व के उन देशों में से एक है जहाँ विविधता अत्यंत व्यापक और जीवंत रूप में दिखाई देती है। यहाँ भाषाई, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा भौगोलिक स्तर पर इतनी विविधता विद्यमान है कि प्रत्येक क्षेत्र अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। देश के अलग-अलग भागों में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं, विविध परंपराएँ और रीति-रिवाज अपनाए जाते हैं, अलग-अलग वेशभूषाएँ और खान-पान की परंपराएँ दिखाई देती हैं तथा जीवन-शैलियों में भी व्यापक अंतर पाया जाता है। इसके बावजूद भारतीय समाज में एक साझा राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक जुड़ाव दिखाई देता है। यही विशेषता

“विविधता में एकता” की भावना को जन्म देती है जो भारतीय समाज की मूल पहचान मानी जाती है। यह भावना केवल एक आदर्श या नारा नहीं है; अपितु भारत की सामाजिक संरचना और लोकतांत्रिक मूल्यों की आधारशिला है। इस एकता को बनाए रखने और सुदृढ़ करने में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा बच्चों में सहिष्णुता, सहयोग, सम्मान और सामूहिकता जैसे मूल्य विकसित किए जा सकते हैं। विद्यालय बच्चों को विभिन्न पृष्ठभूमियों से जोड़ते हैं और उन्हें भिन्नताओं के बीच सहअस्तित्व का अनुभव कराते हैं जिससे वे विविधता को स्वीकार करना सीखते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए भारतीय शिक्षा प्रणाली को पुनर्गठित करने का प्रयास करती है। यह नीति शिक्षा को समावेशी, बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और लचीला बनाने पर बल देती है ताकि सभी विद्यार्थियों को उनकी पृष्ठभूमि के अनुरूप सीखने के अवसर मिल सकें। नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और वैश्विक दृष्टिकोण का विकास करना है। इसके माध्यम से शिक्षा को केवल ज्ञान प्रदान करने का साधन नहीं; बल्कि व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक समन्वय का माध्यम माना गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं, स्थानीय ज्ञान परंपराओं और सांस्कृतिक विविधता को शिक्षा में स्थान देते हुए विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से जोड़ने का प्रयास करती है तथा साथ ही उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी और संवेदनशील नागरिक बनने के लिए तैयार करती है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल दर्शन विविधता को स्वीकार करते हुए एकता को सुदृढ़ करना है। यह नीति ऐसे नागरिकों के निर्माण की परिकल्पना करती है जो विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं का सम्मान करते हुए समतामूलक, लोकतांत्रिक और बहुलतावादी समाज के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँ। इसलिए कहा जा सकता है कि “विविधता में एकता” की अवधारणा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के केंद्र में स्थित है और शिक्षा के माध्यम से इसे व्यवहार में उतारने का प्रयास किया गया है।

विविधता में एकता : अवधारणा और महत्व

“विविधता में एकता” भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, जिसका अर्थ है- भाषा, संस्कृति, धर्म, क्षेत्र और परंपराओं में भिन्नता होने के बावजूद एक साझा राष्ट्रीय पहचान का निर्माण। यह केवल एक नारा नहीं; अपितु लोकतांत्रिक और बहुलतावादी समाज की आधारशिला है। भारत जैसे विशाल देश में विविधता स्वाभाविक रूप से अनेक स्तरों पर दिखाई देती है। यहाँ भाषाई विविधता अत्यंत समृद्ध है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं। सांस्कृतिक विविधता भारत की विशेष पहचान है जिसमें विभिन्न प्रदेशों की परंपराएँ, वेशभूषाएँ, खान-पान और उत्सव शामिल हैं। धार्मिक विविधता के रूप में अनेक धर्मों के लोग एक साथ रहते हुए सामाजिक समरसता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

सामाजिक विविधता में विभिन्न समुदायों, जीवन-शैलियों और परंपराओं का सहअस्तित्व देखने को मिलता है; जबकि क्षेत्रीय विविधता देश के भौगोलिक विस्तार, जलवायु और जीवन-पद्धतियों में परिलक्षित होती है। आर्थिक विविधता भी भारतीय समाज का एक पक्ष है जहाँ अलग-अलग आर्थिक पृष्ठभूमियों के लोग मिलकर समाज का निर्माण करते हैं। इसके अतिरिक्त भारत की ज्ञान परंपराओं में भी विविधता दिखाई देती है जिसमें लोक ज्ञान, पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समन्वय है। इन सभी विविधताओं के बावजूद भारतीय समाज एक साझी मूल्य-व्यवस्था, संविधान और राष्ट्रीय भावना से जुड़ा हुआ है। यही एकता भारत को सुदृढ़ बनाती है। इस एकता के विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालय बच्चों को विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से जोड़ते हैं तथा उन्हें सहअस्तित्व, सहयोग और परस्पर सम्मान का अनुभव कराते हैं। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी यह समझते हैं कि भिन्नताएँ विभाजन का कारण नहीं; बल्कि समृद्धि का आधार हैं और यही समझ "विविधता में एकता" की भावना को सशक्त बनाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का दृष्टिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को अधिक समग्र, समावेशी और बहुभाषिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह नीति भारतीय संस्कृति, भाषाओं और विविध परंपराओं के सम्मान के साथ आधुनिक ज्ञान, कौशल और वैश्विक दृष्टिकोण का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करती है। इसका उद्देश्य ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना है जो विद्यार्थियों को केवल विषयगत ज्ञान ही न दे; बल्कि उन्हें विविधता को समझने, स्वीकार करने और उसके साथ समरस होकर जीवन जीने के लिए तैयार करे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात पर बल देती है कि शिक्षा सभी के लिए समान और सुलभ हो जिससे सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों को भी गुणवत्तापूर्ण अवसर प्राप्त हों। नीति बहुभाषिक शिक्षा को प्रोत्साहित करते हुए मातृभाषा और स्थानीय भाषाओं के उपयोग को महत्व देती है जिससे विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है और भाषाई विविधता का सम्मान विकसित होता है। इसके साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा, कला, साहित्य और स्थानीय अनुभवों को शिक्षा में समाहित करने पर जोर दिया गया है जिससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता और राष्ट्रीय गौरव की भावना विकसित हो। नीति मूल्य आधारित शिक्षा को भी महत्वपूर्ण मानती है जिसके माध्यम से सहयोग, सहिष्णुता, सम्मान और लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास होता है। अनुभवात्मक और गतिविधि आधारित अधिगम के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और जीवन से जुड़ा हुआ बनाने पर विशेष जोर दिया गया है। साथ ही, स्थानीय संदर्भों से जुड़े हुए वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने पर बल दिया गया है ताकि विद्यार्थी अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए विश्व नागरिक के रूप में विकसित हो सकें।

बहुविषयक शिक्षा की अवधारणा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों और दृष्टिकोणों को समझने का अवसर देती है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं रखती; बल्कि इसे सामाजिक-सांस्कृतिक संवेदनशीलता, राष्ट्रीय एकता और समग्र व्यक्तित्व विकास का सशक्त माध्यम मानती है।

विविधता में एकता को बढ़ावा देने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका

भारत जैसे बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और बहुस्तरीय समाज में शिक्षा की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है; अपितु यह सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक सम्मान और राष्ट्रीय एकता को विकसित करने का माध्यम भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी व्यापक दृष्टिकोण को सामने लाती है और शिक्षा को इस प्रकार पुनर्गठित करने का प्रयास करती है कि विविधताओं के बीच एकता की भावना विकसित हो सके। यह नीति विद्यार्थियों को उनकी स्थानीय पहचान से जोड़ते हुए राष्ट्रीय और वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने पर बल देती है। विशेष रूप से बहुभाषिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश और समावेशी शिक्षा जैसे प्रावधान विविधता में एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन तीनों आयामों के माध्यम से शिक्षा न केवल ज्ञान का प्रसार करती है; बल्कि समाज में सहयोग, सम्मान और सहअस्तित्व की भावना भी विकसित करती है। विविधता में एकता को बढ़ावा देने के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका को निम्न आधारों पर स्पष्ट किया जा सकता है-

1. बहुभाषिक शिक्षा और भाषाई विविधता-भारत भाषाई विविधता का अनूठा उदाहरण है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और हजारों बोलियाँ प्रचलित हैं। प्रत्येक भाषा अपने साथ एक विशिष्ट संस्कृति, इतिहास और जीवन दृष्टि लेकर आती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस भाषाई विविधता को देश की शक्ति मानती है और बहुभाषिकता को शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार बनाती है। नीति के अनुसार प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा प्रदान करने की सिफारिश की गई है। यह प्रावधान केवल भाषा के उपयोग तक सीमित नहीं है; बल्कि बच्चों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक विकास से भी जुड़ा हुआ है। जब बच्चे अपनी मातृभाषा में सीखते हैं तो वे सहजता से अवधारणाओं को समझते हैं, सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्ति करते हैं। बहुभाषिक शिक्षा विद्यार्थियों को अपनी भाषा और संस्कृति से जोड़ने का कार्य करती है। इससे बच्चों में अपनी पहचान के प्रति गर्व की भावना विकसित होती है और वे अपनी परंपराओं को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। साथ ही, अन्य भाषाओं के संपर्क में आने से विद्यार्थियों में भाषाई सहिष्णुता और विविधता के प्रति सम्मान

विकसित होता है। यह दृष्टिकोण उन्हें यह समझने में सहायता करता है कि विभिन्न भाषाएँ अलग-अलग अनुभवों और विचारों की वाहक होती हैं और सभी भाषाओं का अपना महत्व है।

बहुभाषिक शिक्षा के माध्यम से सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण भी संभव होता है। जब विद्यालयों में स्थानीय भाषाओं और बोलियों का उपयोग किया जाता है तो क्षेत्रीय संस्कृति और लोक परंपराएँ भी शिक्षा का हिस्सा बनती हैं। इससे विद्यार्थियों को अपने समाज और परिवेश के बारे में गहराई से जानने का अवसर मिलता है। साथ ही, यह प्रक्रिया भाषाई सम्मान की भावना को भी बढ़ाती है। जब अलग-अलग भाषाओं को समान महत्व दिया जाता है तो विद्यार्थियों में किसी भाषा या समुदाय के प्रति पूर्वाग्रह कम होते हैं और परस्पर सम्मान विकसित होता है। बहुभाषिक शिक्षा राष्ट्रीय एकता के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब विद्यार्थी विभिन्न भाषाओं से परिचित होते हैं तो वे अलग-अलग क्षेत्रों और समुदायों के लोगों के साथ संवाद स्थापित कर सकते हैं। इससे आपसी समझ और सहयोग बढ़ता है। उदाहरण के लिए- यदि एक विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त करता है तो वह देश के विभिन्न हिस्सों से जुड़े लोगों के साथ सहज रूप से संवाद कर सकता है। यह संवाद राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाता है और विविधता के बीच संबंध स्थापित करता है।

इसके अतिरिक्त बहुभाषिकता संज्ञानात्मक विकास को भी प्रोत्साहित करती है। अनेक शोधों में यह पाया गया है कि बहुभाषिक विद्यार्थी समस्या समाधान, रचनात्मकता और विश्लेषणात्मक सोच में अधिक सक्षम होते हैं। विभिन्न भाषाओं के संपर्क में आने से उनके मस्तिष्क का बहुआयामी विकास होता है और वे विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने की क्षमता विकसित करते हैं। बहुभाषिक शिक्षा केवल भाषा सीखने का माध्यम नहीं; बल्कि वह समग्र विकास का आधार बनती है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा बहुभाषिकता को बढ़ावा देना विविधता में एकता की भावना को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए उन्हें व्यापक राष्ट्रीय पहचान प्रदान करती है और भाषाई विविधता को सामाजिक समरसता में बदलने का माध्यम बनती है।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाने पर विशेष बल देती है। भारत की ज्ञान परंपरा अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण रही है जिसमें दर्शन, गणित, विज्ञान, साहित्य, कला, संगीत, योग, आयुर्वेद, वास्तु और अनेक अन्य क्षेत्रों का समावेश है। यह परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं; बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक है। नीति इस बात पर जोर देती है कि विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा से परिचित कराया जाए ताकि वे अपनी सांस्कृतिक जड़ों को समझ सकें और उनमें राष्ट्रीय गौरव की भावना विकसित हो। भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता विकसित करता है। जब शिक्षा में विभिन्न क्षेत्रों की लोक परंपराएँ, साहित्य, संगीत और कला शामिल किए जाते हैं तो विद्यार्थी देश की

विविध सांस्कृतिक विरासत से परिचित होते हैं। इससे वे यह समझते हैं कि भारत की संस्कृति में अनेक परंपराओं का समन्वय है और प्रत्येक परंपरा का अपना महत्व है। यह समझ उन्हें विविधता को स्वीकार करने और सम्मान देने की प्रेरणा देती है।

इसके साथ ही भारतीय ज्ञान परंपरा विद्यार्थियों में विविध परंपराओं के प्रति सम्मान विकसित करती है। जब विद्यार्थी विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं का अध्ययन करते हैं तो वे यह अनुभव करते हैं कि सभी परंपराएँ समाज के विकास में योगदान देती हैं। इससे उनके मन में किसी विशेष संस्कृति या समुदाय के प्रति पूर्वाग्रह कम होते हैं और समावेशी दृष्टिकोण विकसित होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश राष्ट्रीय गौरव की भावना को भी मजबूत करता है। जब विद्यार्थी भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों, साहित्यिक परंपराओं और दार्शनिक विचारों से परिचित होते हैं तो उन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व होता है। यह गर्व उन्हें अपनी पहचान से जोड़ता है और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाता है। साथ ही यह साझा सांस्कृतिक विरासत का बोध भी कराता है। विद्यार्थी यह समझते हैं कि भिन्नताओं के बावजूद सभी भारतीय एक साझा सांस्कृतिक धरोहर से जुड़े हुए हैं। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश विविधता में एकता को बढ़ावा देने का प्रभावी माध्यम बनता है। यह विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए उन्हें व्यापक राष्ट्रीय पहचान प्रदान करता है और सांस्कृतिक विविधता को समरसता में बदलने में सहायता करता है।

3. समावेशी शिक्षा और समान अवसर- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को सभी के लिए सुलभ और समावेशी बनाने पर विशेष जोर देती है। यह नीति मानती है कि समाज की विविधता तभी एकता में परिवर्तित हो सकती है जब शिक्षा सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचे। इसलिए नीति में सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों, दिव्यांग विद्यार्थियों, जनजातीय क्षेत्रों, ग्रामीण पृष्ठभूमि और अल्पसंख्यक समुदायों के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। इन प्रावधानों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे और सभी को समान अवसर प्राप्त हों। समावेशी शिक्षा सामाजिक समरसता को बढ़ावा देती है। जब विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थी एक साथ सीखते हैं तो वे एक-दूसरे के अनुभवों और जीवन स्थितियों को समझते हैं। इससे उनके बीच सहयोग, संवेदनशीलता और सम्मान की भावना विकसित होती है। यह प्रक्रिया विविधता को विभाजन के बजाय सामूहिक शक्ति में बदलने का कार्य करती है। समावेशी शिक्षा समान अवसर सुनिश्चित करती है। जब सभी विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है तो समाज में असमानताएँ कम होती हैं। इससे सामाजिक न्याय और समानता की भावना विकसित होती है। यह लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है।

विविध पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों का साथ सीखना भी समावेशी शिक्षा का महत्वपूर्ण पहलू है। जब अलग-अलग सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश वाले विद्यार्थी एक ही कक्षा में अध्ययन करते हैं तो वे विविधता को अनुभव करते हैं। यह अनुभव उन्हें सहअस्तित्व और सहयोग की भावना सिखाता है। वे यह समझते हैं कि भिन्नताएँ समाज को समृद्ध बनाती हैं और सभी को साथ लेकर चलना आवश्यक है। समावेशी शिक्षा लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसमें समानता, न्याय, सम्मान और भागीदारी जैसे मूल्य स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं। विद्यार्थी सीखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति समान अधिकारों का अधिकारी है और समाज में सभी की भूमिका महत्वपूर्ण है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की समावेशी शिक्षा की अवधारणा सामाजिक विविधता को एकता में बदलने का प्रभावी माध्यम है। यह नीति शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं; बल्कि सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय एकता के निर्माण का आधार मानती है। बहुभाषिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश और समावेशी शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विविधता में एकता की भावना को सुदृढ़ करने की दिशा में एक व्यापक और दूरदर्शी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

4. मूल्य आधारित शिक्षा और नागरिकता- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का माध्यम न मानकर व्यक्तित्व निर्माण और उत्तरदायी नागरिकता के विकास का आधार मानती है। इस नीति में विशेष रूप से संवैधानिक मूल्यों, मानवाधिकारों, सहिष्णुता, परस्पर सम्मान और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करने पर बल दिया गया है। विविधता से भरे भारतीय समाज में यह अत्यंत आवश्यक है कि विद्यार्थी केवल ज्ञान अर्जित न करें; बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों को समझें और व्यवहार में उतारें। मूल्य आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता करती है कि समाज में विभिन्न भाषा, धर्म, संस्कृति और जीवन-शैलियाँ होने के बावजूद सभी लोग समान अधिकार और सम्मान के अधिकारी हैं। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का माध्यम बनती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लोकतंत्र के मूल्यों को शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार मानती है। विद्यालयों में सहयोगात्मक अधिगम, समूह कार्य, सहभागिता आधारित गतिविधियाँ और संवादात्मक वातावरण विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक व्यवहार सिखाते हैं। विद्यार्थी अपनी बात रखना, दूसरों को सुनना और सामूहिक निर्णय लेना सीखते हैं। इससे उनमें जिम्मेदार नागरिकता की भावना विकसित होती है। समानता का मूल्य भी शिक्षा के माध्यम से विकसित किया जाता है जिसमें सभी विद्यार्थियों को समान अवसर, सम्मान और भागीदारी का अधिकार दिया जाता है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों में भेदभाव रहित सोच विकसित करता है और विविधता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

बंधुत्व की भावना भी विविधता में एकता का आधार है। जब विद्यार्थी विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए साथियों के साथ सीखते हैं तो उनमें सहयोग, संवेदनशीलता और सहानुभूति विकसित होती है। वे यह अनुभव करते हैं कि भिन्नताओं के बावजूद सभी एक ही समाज का हिस्सा हैं। न्याय का मूल्य विद्यार्थियों को निष्पक्षता, अधिकार और जिम्मेदारी का बोध कराता है। इससे वे सामाजिक असमानताओं को समझते हैं और समानता की दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं। सहिष्णुता का मूल्य विद्यार्थियों को यह सिखाता है कि विचारों, विश्वासों और परंपराओं में भिन्नता होना स्वाभाविक है और इन भिन्नताओं को स्वीकार करना ही लोकतांत्रिक समाज की पहचान है। विविधता के सम्मान का मूल्य विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और समुदायों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करता है। इस प्रकार मूल्य आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को केवल अच्छे विद्यार्थी ही नहीं; बल्कि जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनने के लिए तैयार करती है। जब शिक्षा के माध्यम से लोकतंत्र, समानता, बंधुत्व, न्याय, सहिष्णुता और विविधता के सम्मान जैसे मूल्य विकसित होते हैं तो विद्यार्थी विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के साथ सामंजस्य स्थापित करना सीखते हैं। इससे समाज में आपसी समझ, सहयोग और एकता की भावना सुदृढ़ होती है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल्य आधारित शिक्षा की अवधारणा विविधता में एकता को मजबूत करने का प्रभावी माध्यम बनती है।

5. स्थानीय से वैश्विक दृष्टिकोण- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को स्थानीय संदर्भ से जोड़ते हुए वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने पर विशेष बल देती है। यह नीति इस बात को स्वीकार करती है कि विद्यार्थी अपनी जड़ों से जुड़कर ही व्यापक दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं। इसलिए शिक्षा को स्थानीय संस्कृति, परंपराओं, भाषाओं और ज्ञान प्रणालियों से जोड़ने की आवश्यकता है। जब विद्यार्थी अपने परिवेश को समझते हैं तब वे अन्य संस्कृतियों और समाजों के प्रति सम्मानपूर्ण दृष्टिकोण विकसित करते हैं। यह दृष्टिकोण विविधता में एकता की भावना को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्थानीय कला और शिल्प का अध्ययन विद्यार्थियों को अपने क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत से जोड़ता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग लोक कलाएँ, हस्तशिल्प और परंपराएँ विकसित हुई हैं। जब इन्हें शिक्षा का हिस्सा बनाया जाता है तो विद्यार्थी न केवल अपनी संस्कृति को समझते हैं; बल्कि अन्य क्षेत्रों की कलाओं के प्रति भी सम्मान विकसित करते हैं। इसी प्रकार क्षेत्रीय इतिहास का अध्ययन विद्यार्थियों को अपने समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित कराता है। वे यह समझते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों की ऐतिहासिक घटनाएँ और परंपराएँ मिलकर राष्ट्रीय इतिहास का निर्माण करती हैं। इससे राष्ट्रीय पहचान मजबूत होती है।

स्थानीय भाषाओं का उपयोग भी इस दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण भाग है। जब विद्यार्थी अपनी भाषा में सीखते हैं और अन्य भाषाओं से परिचित होते हैं तो उनमें बहुसांस्कृतिक समझ विकसित होती है।

इससे वे विविधता को स्वीकार करते हैं और विभिन्न समुदायों के साथ संवाद स्थापित कर पाते हैं। इसके साथ ही, शिक्षा में वैश्विक नागरिकता के विकास पर भी बल दिया गया है। विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार, शांति, सतत विकास और वैश्विक सहयोग जैसे विषयों से परिचित कराया जाता है। इससे वे स्वयं को केवल स्थानीय या राष्ट्रीय स्तर तक सीमित नहीं रखते; बल्कि वैश्विक समाज का हिस्सा मानते हैं। इस प्रकार स्थानीय से वैश्विक दृष्टिकोण विद्यार्थियों में संतुलित सोच विकसित करता है। वे अपनी संस्कृति का सम्मान करते हुए अन्य संस्कृतियों को भी स्वीकार करते हैं। यह दृष्टिकोण विविधता में एकता को सुदृढ़ करता है और विद्यार्थियों को संवेदनशील, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है।

6. बहुविषयक शिक्षा और समग्र विकास- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुविषयक शिक्षा को शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण आधार मानती है। पारंपरिक शिक्षा में विषयों को अलग-अलग खंडों में विभाजित कर दिया गया था जिससे विद्यार्थियों का दृष्टिकोण सीमित हो जाता था। बहुविषयक शिक्षा इस विभाजन को समाप्त करते हुए विभिन्न विषयों के बीच संबंध स्थापित करती है। इससे विद्यार्थी ज्ञान को समग्र रूप से समझते हैं और विविध दृष्टिकोण विकसित करते हैं। यह दृष्टिकोण विविधता में एकता की भावना को मजबूत करने में सहायक होता है। बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों, संस्कृतियों और विचारों को समझने का अवसर देती है। उदाहरण के लिए- यदि कोई विद्यार्थी इतिहास, कला और साहित्य को एक साथ पढ़ता है तो वह किसी संस्कृति को अधिक गहराई से समझ पाता है। इसी प्रकार विज्ञान, समाजशास्त्र और पर्यावरण अध्ययन का समन्वय विद्यार्थियों को समाज और प्रकृति के बीच संबंधों को समझने में सहायता करता है। इस प्रक्रिया से विद्यार्थियों में व्यापक दृष्टिकोण विकसित होता है। बहुविषयक शिक्षा से सांस्कृतिक समझ भी बढ़ती है। जब विभिन्न विषयों के माध्यम से अलग-अलग समाजों और संस्कृतियों का अध्ययन किया जाता है तो विद्यार्थी विविधता को अनुभव करते हैं। वे यह समझते हैं कि प्रत्येक संस्कृति का अपना महत्व है और सभी संस्कृतियाँ समाज के विकास में योगदान देती हैं। यह समझ सामाजिक समरसता को बढ़ावा देती है।

इसके अतिरिक्त रचनात्मक सोच का विकास भी बहुविषयक शिक्षा का महत्वपूर्ण परिणाम है। विभिन्न विषयों के संपर्क में आने से विद्यार्थी नए विचारों को जोड़ते हैं और नवाचार की दिशा में सोचते हैं। वे समस्याओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने की क्षमता विकसित करते हैं। इससे उनकी आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक सोच मजबूत होती है। बहुविषयक शिक्षा सामाजिक समरसता को भी बढ़ाती है। जब विद्यार्थी विविध विषयों और अनुभवों से परिचित होते हैं तो वे समाज की जटिलताओं को समझते हैं और विभिन्न समुदायों के प्रति संवेदनशील बनते हैं। वे यह अनुभव करते हैं कि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र

मिलकर समाज के विकास में योगदान देते हैं। इस प्रकार बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों के समग्र विकास के साथ-साथ विविधता में एकता की भावना को सुदृढ़ करती है।

7. कला, संस्कृति और खेल का समावेश- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कला, संस्कृति और खेल को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा मानती है। यह नीति इस बात को स्वीकार करती है कि शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं होनी चाहिए; बल्कि इसमें कला, संगीत, नृत्य, नाटक और खेल जैसी गतिविधियों को भी शामिल किया जाना चाहिए। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों के समग्र विकास के साथ-साथ सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक समझ को भी बढ़ाती हैं। कला और संस्कृति के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न परंपराओं और जीवन-शैलियों से परिचित होते हैं। उदाहरण के लिए- लोक नृत्य, लोक संगीत और नाट्य प्रस्तुतियाँ विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक विविधता का अनुभव कराती हैं। इससे उनमें सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान विकसित होता है। कला गतिविधियाँ विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति का अवसर भी प्रदान करती हैं जिससे वे अपने विचारों और भावनाओं को साझा करते हैं। यह प्रक्रिया सहयोग और समझ को बढ़ाती है।

खेल गतिविधियाँ विद्यार्थियों में सहयोग, अनुशासन और टीम भावना विकसित करती हैं। खेल में विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए विद्यार्थी एक टीम के रूप में कार्य करते हैं। इससे उनमें सामूहिक पहचान और एकता की भावना विकसित होती है। वे यह सीखते हैं कि सफलता सामूहिक प्रयास से प्राप्त होती है। खेल के माध्यम से प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ सहयोग का संतुलन भी विकसित होता है। कला, संस्कृति और खेल का समावेश सामाजिक समरसता को भी बढ़ाता है। जब विद्यार्थी विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं तो वे एक-दूसरे की परंपराओं को समझते हैं और सम्मान देते हैं। इससे पूर्वाग्रह कम होते हैं और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। सामूहिक प्रस्तुतियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम और खेल प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों को एक साथ लाती हैं और उनमें एकता की भावना विकसित करती हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा कला, संस्कृति और खेल को शिक्षा में शामिल करना विविधता में एकता को मजबूत करने का प्रभावी माध्यम है। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों को सांस्कृतिक विविधता का अनुभव कराती हैं, सहयोग की भावना विकसित करती हैं, सामूहिक पहचान को सुदृढ़ करती हैं और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देती हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा केवल ज्ञान का माध्यम नहीं रहती; बल्कि एक ऐसे समाज के निर्माण का आधार बनती है जहाँ विविधता को स्वीकार करते हुए एकता की भावना सशक्त रूप में विकसित होती है।

विद्यालयी शिक्षा में विविधता में एकता का विकास

विद्यालय समाज का लघु रूप होते हैं जहाँ विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, सामाजिक पृष्ठभूमियों और जीवन अनुभवों से आने वाले विद्यार्थी एक साथ सीखते हैं। इस कारण विद्यालय विविधता में एकता की भावना विकसित करने का सबसे प्रभावी मंच बनते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इस बात पर बल देती है कि विद्यालयों में ऐसा वातावरण निर्मित किया जाए जो विद्यार्थियों को भिन्नताओं को स्वीकार करने, सम्मान देने और सहयोग के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दे। विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सहिष्णुता, सामूहिकता, सहयोग और राष्ट्रीय एकता के मूल्य विकसित किए जा सकते हैं। यदि विद्यालय योजनाबद्ध रूप से बहुभाषिक वातावरण, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, सहयोगात्मक अधिगम, अनुभवात्मक शिक्षण और समावेशी पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करें तो विविधता में एकता की भावना स्वाभाविक रूप से विकसित हो सकती है।

1. बहुभाषिक कक्षा वातावरण- बहुभाषिक कक्षा वातावरण विविधता में एकता के विकास का महत्वपूर्ण आधार है। भारत जैसे देश में विद्यार्थी विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमियों से विद्यालय में आते हैं। यदि कक्षा में केवल एक भाषा को महत्व दिया जाए तो अन्य भाषाओं के विद्यार्थी स्वयं को अलग महसूस कर सकते हैं। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुभाषिक शिक्षा को बढ़ावा देती है और कक्षा में विभिन्न भाषाओं के सम्मान पर जोर देती है। जब शिक्षक विद्यार्थियों की मातृभाषाओं को महत्व देते हैं तो विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है और वे सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं। कक्षा में बहुभाषिक गतिविधियाँ आयोजित करने से विद्यार्थियों को विभिन्न भाषाओं से परिचित होने का अवसर मिलता है। उदाहरण के लिए- विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में कविता या कहानी प्रस्तुत कर सकते हैं, शब्दावली साझा कर सकते हैं या विभिन्न भाषाओं में अभिवादन सीख सकते हैं। ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता करती हैं कि भाषाई विविधता समाज की समृद्धि का प्रतीक है। स्थानीय कहानियों का उपयोग भी बहुभाषिक वातावरण को सशक्त बनाता है। जब विभिन्न क्षेत्रों की लोक कथाएँ और कहानियाँ कक्षा में साझा की जाती हैं तो विद्यार्थी विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं से परिचित होते हैं। इससे उनमें सांस्कृतिक सम्मान और जिज्ञासा विकसित होती है। अनुवाद गतिविधियाँ भी इस दिशा में प्रभावी होती हैं। विद्यार्थी एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्द, वाक्य या कहानी का अनुवाद करते हैं जिससे वे भाषाओं के बीच संबंध को समझते हैं। यह प्रक्रिया सहयोग और संवाद को बढ़ाती है। इस प्रकार बहुभाषिक कक्षा वातावरण विद्यार्थियों को विभिन्न भाषाओं के प्रति सम्मान विकसित करने में सहायता करता है और उन्हें विविधता को स्वीकार करने की प्रेरणा देता है। इससे कक्षा में समावेशी वातावरण बनता है और विविधता में एकता की भावना मजबूत होती है।

2. सांस्कृतिक उत्सव- विद्यालयों में सांस्कृतिक उत्सव विविधता में एकता को अनुभवात्मक रूप से विकसित करने का प्रभावी माध्यम हैं। भारत में विभिन्न राज्यों और समुदायों के त्योहार, परंपराएँ और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ अलग-अलग हैं। जब विद्यालय इन विविधताओं को मनाने का अवसर प्रदान करते हैं तो विद्यार्थी विभिन्न संस्कृतियों को समझते हैं और उनका सम्मान करना सीखते हैं। विभिन्न राज्यों के त्योहारों का आयोजन विद्यार्थियों को देश की सांस्कृतिक विविधता से परिचित कराता है। उदाहरण के लिए- दीपावली, ईद, पोंगल, बिहू, बैसाखी, ओणम आदि त्योहारों के बारे में जानकारी और उनसे संबंधित गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं। इससे विद्यार्थियों में विभिन्न समुदायों के प्रति सम्मान विकसित होता है और वे साझा सांस्कृतिक पहचान को समझते हैं।

सांस्कृतिक दिवस भी विविधता को प्रोत्साहित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। इस अवसर पर विद्यार्थी विभिन्न राज्यों की वेशभूषा, भाषा, गीत और नृत्य प्रस्तुत करते हैं। भोजन और वेशभूषा प्रदर्शन से विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों की जीवन शैली से परिचित होते हैं। वे यह अनुभव करते हैं कि भिन्नताओं के बावजूद सभी संस्कृतियाँ समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। लोक कला कार्यक्रम भी सांस्कृतिक विविधता को समझने का अवसर प्रदान करते हैं। लोक नृत्य, लोक संगीत और नाट्य प्रस्तुतियाँ विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों से जोड़ती हैं। इन कार्यक्रमों में सामूहिक भागीदारी से सहयोग और एकता की भावना विकसित होती है। इस प्रकार सांस्कृतिक उत्सव विद्यार्थियों को विविधता का अनुभव कराते हैं और उन्हें एक-दूसरे की परंपराओं का सम्मान करना सिखाते हैं।

3. सहयोगात्मक अधिगम- सहयोगात्मक अधिगम विविधता में एकता के विकास का महत्वपूर्ण शैक्षिक दृष्टिकोण है। इस पद्धति में विद्यार्थी समूहों में मिलकर कार्य करते हैं और एक-दूसरे से सीखते हैं। जब विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए विद्यार्थी एक समूह में कार्य करते हैं तो वे विविधता को अनुभव करते हैं और सहयोग की भावना विकसित करते हैं। समूह कार्य के माध्यम से विद्यार्थी अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार योगदान देते हैं। इससे उन्हें यह समझने में सहायता मिलती है कि प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका महत्वपूर्ण है। सहयोगात्मक वातावरण में विद्यार्थी एक-दूसरे की बात सुनना, विचार साझा करना और सामूहिक निर्णय लेना सीखते हैं। यह प्रक्रिया लोकतांत्रिक मूल्यों को भी मजबूत करती है। परियोजना आधारित शिक्षण भी सहयोगात्मक अधिगम का प्रभावी माध्यम है। जब विद्यार्थी किसी विषय पर परियोजना तैयार करते हैं तो वे विभिन्न दृष्टिकोणों से जानकारी एकत्र करते हैं और सामूहिक रूप से प्रस्तुत करते हैं। इससे उनकी समझ व्यापक होती है और वे विविध विचारों का सम्मान करना सीखते हैं। मिश्रित समूह गतिविधियाँ विविधता को बढ़ावा देने में विशेष रूप से उपयोगी हैं। शिक्षक ऐसे समूह बनाते हैं जिनमें विभिन्न भाषाओं, क्षमताओं और पृष्ठभूमियों के विद्यार्थी शामिल हों। इससे विद्यार्थी

एक-दूसरे के अनुभवों से सीखते हैं और परस्पर सहयोग की भावना विकसित करते हैं। इस प्रकार सहयोगात्मक अधिगम विद्यार्थियों में सामूहिकता और एकता की भावना को मजबूत करता है।

4. अनुभवात्मक शिक्षण- अनुभवात्मक शिक्षण विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन से जोड़ते हुए विविधता को समझने का अवसर प्रदान करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अनुभव आधारित शिक्षण पर विशेष बल देती है ताकि विद्यार्थी केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रहें; बल्कि समाज और संस्कृति को प्रत्यक्ष अनुभव से समझें। स्थानीय समुदाय से जुड़ाव अनुभवात्मक शिक्षण का महत्वपूर्ण भाग है। जब विद्यार्थी अपने समुदाय के लोगों, शिल्पकारों, कलाकारों और परंपराओं से परिचित होते हैं तो वे समाज की विविधता को समझते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें अपने परिवेश के प्रति संवेदनशील बनाती है और सहयोग की भावना विकसित करती है।

शैक्षिक भ्रमण भी विविधता को अनुभव करने का प्रभावी माध्यम है। संग्रहालय, ऐतिहासिक स्थल, सांस्कृतिक केंद्र और स्थानीय संस्थानों का भ्रमण विद्यार्थियों को विभिन्न परंपराओं और इतिहास से परिचित कराता है। यह अनुभव उन्हें विविधता की वास्तविक समझ प्रदान करता है। सांस्कृतिक अध्ययन गतिविधियाँ भी इस दिशा में सहायक होती हैं। विद्यार्थी विभिन्न राज्यों या समुदायों की संस्कृति पर अध्ययन करते हैं और प्रस्तुतियाँ तैयार करते हैं। इससे वे विभिन्न जीवन शैलियों को समझते हैं और सम्मान करना सीखते हैं। इस प्रकार अनुभवात्मक शिक्षण विद्यार्थियों में विविधता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है और एकता की भावना को मजबूत करता है।

5. पाठ्यपुस्तकों की भूमिका- विविधता में एकता के विकास में पाठ्यपुस्तकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों के विचारों और दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं। यदि पाठ्यपुस्तकों में विविधता का समावेश हो तो विद्यार्थी विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं। विविधता आधारित पाठ विद्यार्थियों को विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं से परिचित कराते हैं। कहानियाँ, कविताएँ और गतिविधियाँ विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवों को प्रस्तुत करती हैं जिससे विद्यार्थियों की समझ व्यापक होती है। विभिन्न संस्कृतियों का समावेश विद्यार्थियों में सम्मान और संवेदनशीलता विकसित करता है। समावेशी भाषा का उपयोग भी अत्यंत आवश्यक है। पाठ्यपुस्तकों में ऐसी भाषा का प्रयोग होना चाहिए जो किसी भी समुदाय या समूह के प्रति पूर्वाग्रह न दर्शाए। समावेशी भाषा विद्यार्थियों में समानता और सम्मान की भावना विकसित करती है।

इस प्रकार विद्यालयों में बहुभाषिक कक्षा वातावरण, सांस्कृतिक उत्सव, सहयोगात्मक अधिगम, अनुभवात्मक शिक्षण और समावेशी पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से विविधता में एकता की भावना को प्रभावी रूप से विकसित किया जा सकता है। ये प्रयास विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं;

बल्कि उन्हें संवेदनशील, सहयोगी और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करते हैं। विद्यालय इस प्रकार ऐसे वातावरण का निर्माण करते हैं जहाँ भिन्नताएँ विभाजन का कारण नहीं बनती; बल्कि सामूहिक शक्ति और राष्ट्रीय एकता का आधार बनती हैं।

शिक्षक की भूमिका

विविधता में एकता की भावना के विकास में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि शिक्षक ही कक्षा में ऐसा वातावरण निर्मित करते हैं जहाँ विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, सामाजिक पृष्ठभूमियों और क्षमताओं से आने वाले विद्यार्थी एक साथ सीखते हैं। शिक्षक का दृष्टिकोण और व्यवहार विद्यार्थियों के सोचने के तरीके को प्रभावित करता है। यदि शिक्षक समावेशी और संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाते हैं तो विद्यार्थी भी विविधता को सकारात्मक रूप में स्वीकार करना सीखते हैं। शिक्षक कक्षा को ऐसा मंच बना सकते हैं जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं को सम्मानित और सुरक्षित महसूस करे। समावेशी वातावरण का निर्माण शिक्षक की प्राथमिक जिम्मेदारी है। जब शिक्षक सभी विद्यार्थियों को समान अवसर देते हैं, उनकी बात सुनते हैं और उनकी पृष्ठभूमि का सम्मान करते हैं तो कक्षा में सहयोग और विश्वास का माहौल विकसित होता है। इससे विद्यार्थी भिन्नताओं को स्वीकार करते हैं और एक-दूसरे के साथ मिलकर सीखते हैं। शिक्षक का यह दायित्व भी है कि वे सभी भाषाओं का सम्मान करें और विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित करें। बहुभाषिक कक्षा में शिक्षक यदि विभिन्न भाषाओं को महत्व देते हैं तो विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है और वे सक्रिय रूप से अधिगम में भाग लेते हैं। इससे भाषाई विविधता के प्रति सम्मान विकसित होता है और विद्यार्थी यह समझते हैं कि प्रत्येक भाषा ज्ञान और संस्कृति की वाहक होती है। इसी प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों में सांस्कृतिक संवेदनशीलता विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, त्योहारों और जीवन-शैलियों से संबंधित गतिविधियाँ आयोजित कर सकते हैं जिससे विद्यार्थी विविधता का अनुभव करते हैं और विभिन्न समुदायों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करते हैं।

विविधता आधारित गतिविधियाँ शिक्षक के लिए एक प्रभावी माध्यम हैं जिनके माध्यम से वे विद्यार्थियों में सहयोग और एकता की भावना विकसित कर सकते हैं। समूह कार्य, परियोजना आधारित शिक्षण, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, लोक कहानियों का साझा करना और बहुभाषिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों को एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने का अवसर देती हैं। इन गतिविधियों से विद्यार्थी यह अनुभव करते हैं कि भिन्नताएँ सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध बनाती हैं। शिक्षक का यह भी दायित्व है कि वे पूर्वाग्रह मुक्त शिक्षण अपनाएँ। उन्हें किसी भी भाषा, संस्कृति, लिंग या सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव से बचना चाहिए। जब शिक्षक निष्पक्ष और संवेदनशील व्यवहार करते हैं तो विद्यार्थी भी समानता और

सम्मान के मूल्य अपनाते हैं। अंततः शिक्षक विद्यार्थियों को यह समझाते हैं कि भिन्नता कमजोरी नहीं बल्कि समाज की शक्ति है। वे विद्यार्थियों को यह अनुभव कराते हैं कि अलग-अलग विचार, अनुभव और संस्कृतियाँ मिलकर समाज को समृद्ध बनाती हैं। इस प्रकार शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाले नहीं; बल्कि ऐसे मार्गदर्शक होते हैं जो विद्यार्थियों में सहिष्णुता, सहयोग और राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करते हैं। विविधता में एकता के निर्माण में शिक्षक की संवेदनशील और समावेशी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनके माध्यम से ही विद्यालय में ऐसा वातावरण तैयार होता है जहाँ भिन्नताएँ स्वीकार की जाती हैं और एकता सशक्त रूप में विकसित होती है।

प्रमुख चुनौतियाँ

विविधता में एकता की भावना को शिक्षा के माध्यम से विकसित करना एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है, किंतु इसके प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। भारत जैसे बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और विविधतापूर्ण देश में शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार विकसित करना कि वह सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके, एक जटिल प्रक्रिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने विविधता में एकता को बढ़ावा देने के लिए व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, परंतु इस दृष्टिकोण को व्यवहार में लागू करने के दौरान कई व्यावहारिक कठिनाइयाँ सामने आती हैं। इन चुनौतियों को समझना और उनके समाधान की दिशा में प्रयास करना आवश्यक है, तभी शिक्षा प्रणाली वास्तव में समावेशी और एकतामूलक बन सकेगी।

सबसे पहली चुनौती बहुभाषिक शिक्षकों की कमी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बहुभाषिक शिक्षा पर जोर देती है और प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षण की सिफारिश करती है। किंतु कई क्षेत्रों में ऐसे शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं जो एक से अधिक भाषाओं में दक्ष हों। विशेष रूप से शहरी विद्यालयों में विभिन्न राज्यों से आने वाले विद्यार्थियों की भाषाई विविधता अधिक होती है; जहाँ एक ही कक्षा में कई भाषाएँ बोलने वाले विद्यार्थी होते हैं। ऐसे में शिक्षक के लिए सभी विद्यार्थियों की भाषाई आवश्यकताओं को पूरा करना कठिन हो जाता है। इससे कुछ विद्यार्थी स्वयं को अलग महसूस करते हैं और अधिगम की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी नहीं कर पाते। इस चुनौती को दूर करने के लिए शिक्षकों को बहुभाषिक प्रशिक्षण प्रदान करना आवश्यक है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाषा संवेदनशीलता, बहुभाषिक रणनीतियाँ और स्थानीय भाषाओं के उपयोग पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती संसाधनों की कमी है। विविधता आधारित शिक्षा के लिए समावेशी पाठ्य सामग्री, बहुभाषिक पुस्तकों, सांस्कृतिक गतिविधियों और अनुभवात्मक शिक्षण के लिए पर्याप्त

संसाधनों की आवश्यकता होती है। कई विद्यालयों में इन संसाधनों का अभाव होता है, विशेषकर ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में। पुस्तकालय, डिजिटल सामग्री, स्थानीय सांस्कृतिक संसाधन और शिक्षण सामग्री की कमी के कारण शिक्षक विविधता आधारित गतिविधियाँ प्रभावी ढंग से संचालित नहीं कर पाते। इस स्थिति में स्थानीय संसाधनों का उपयोग महत्वपूर्ण समाधान हो सकता है। शिक्षक समुदाय, स्थानीय कलाकारों, लोक ज्ञान और आसपास के वातावरण को शिक्षण सामग्री के रूप में उपयोग कर सकते हैं। इससे न केवल संसाधनों की कमी दूर होगी; बल्कि शिक्षा स्थानीय संदर्भ से भी जुड़ सकेगी। क्षेत्रीय असमानताएँ भी विविधता में एकता के विकास में चुनौती प्रस्तुत करती हैं। भारत के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता, संसाधन और अवसरों में अंतर दिखाई देता है। कुछ क्षेत्रों में विद्यालयों की सुविधाएँ सीमित होती हैं; जबकि अन्य क्षेत्रों में अपेक्षाकृत बेहतर व्यवस्था उपलब्ध होती है। यह असमानता विद्यार्थियों के अनुभवों और अवसरों को प्रभावित करती है। विविधता में एकता की भावना तभी विकसित हो सकती है जब सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हों। इसलिए शिक्षा में समानता सुनिश्चित करना आवश्यक है। इसके लिए समावेशी पाठ्यक्रम, समान संसाधन वितरण और विशेष सहायता कार्यक्रमों की आवश्यकता है, ताकि वंचित क्षेत्रों के विद्यार्थियों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।

सांस्कृतिक पूर्वाग्रह भी एक अन्य महत्वपूर्ण चुनौती है। समाज में प्रचलित रूढ़ियाँ और पूर्वाग्रह कभी-कभी विद्यालयों में भी दिखाई देते हैं। भाषा, धर्म, जाति या क्षेत्र के आधार पर बने पूर्वाग्रह विद्यार्थियों के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। यदि कक्षा में ऐसे पूर्वाग्रह मौजूद हों तो विविधता में एकता की भावना विकसित करना कठिन हो जाता है। इस चुनौती को दूर करने के लिए शिक्षकों को संवेदनशील और पूर्वाग्रह मुक्त दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। मूल्य आधारित शिक्षा, संवादात्मक गतिविधियाँ और सहयोगात्मक अधिगम विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को यह समझा सकते हैं कि भिन्नताएँ समाज की शक्ति हैं और सभी संस्कृतियों का सम्मान करना आवश्यक है।

पाठ्य सामग्री की कमी भी एक अन्य चुनौती के रूप में सामने आती है। कई बार पाठ्यपुस्तकों में विविधता का पर्याप्त समावेश नहीं होता जिससे विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बारे में संतुलित जानकारी नहीं मिल पाती। समावेशी और विविधता आधारित पाठ्य सामग्री का विकास आवश्यक है जिसमें विभिन्न भाषाओं, क्षेत्रों और समुदायों का प्रतिनिधित्व हो। समावेशी पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को विविधता को समझने और स्वीकार करने में सहायता करता है। इस दिशा में शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं और शिक्षा संस्थानों को मिलकर कार्य करना होगा।

इन चुनौतियों को दूर करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है। शिक्षकों को समावेशी शिक्षा, बहुभाषिक रणनीतियों और सांस्कृतिक संवेदनशीलता के बारे में प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। प्रशिक्षित शिक्षक विविधता आधारित गतिविधियों को प्रभावी ढंग से संचालित कर सकते हैं और विद्यार्थियों में एकता की भावना विकसित कर सकते हैं। समावेशी पाठ्यक्रम का विकास भी महत्वपूर्ण है जिसमें विविध संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं को स्थान दिया जाए। इससे विद्यार्थियों को व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होगा और वे विभिन्न समुदायों के प्रति सम्मान विकसित कर सकेंगे।

स्थानीय संसाधनों का उपयोग भी समाधान का महत्वपूर्ण माध्यम है। विद्यालय अपने आसपास उपलब्ध सांस्कृतिक, सामाजिक और प्राकृतिक संसाधनों को शिक्षण प्रक्रिया में शामिल कर सकते हैं। स्थानीय कलाकार, शिल्पकार, समुदाय के बुजुर्ग और सांस्कृतिक परंपराएँ विद्यार्थियों के लिए सीखने के महत्वपूर्ण स्रोत बन सकते हैं। इससे शिक्षा अधिक प्रासंगिक और अनुभवात्मक बनती है। समुदाय की भागीदारी भी विविधता में एकता को बढ़ावा देने में सहायक होती है। जब अभिभावक और समुदाय विद्यालय की गतिविधियों में शामिल होते हैं तो विद्यार्थियों को विविधता का वास्तविक अनुभव मिलता है। यह प्रक्रिया विद्यालय और समाज के बीच संबंध को मजबूत करती है।

भविष्य की दिशा

भविष्य की दिशा की दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभावी क्रियान्वयन अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि नीति के प्रावधानों को सही ढंग से लागू किया जाए तो शिक्षा प्रणाली विविधता में एकता की भावना को मजबूत करने में सफल होगी। इससे राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ होगी और समाज में सहयोग और समरसता का वातावरण विकसित होगा। विविधता का सम्मान बढ़ेगा और विभिन्न समुदायों के बीच सकारात्मक संबंध स्थापित होंगे। शिक्षा के माध्यम से समावेशी समाज का निर्माण संभव होगा जहाँ सभी व्यक्तियों को समान अवसर और सम्मान प्राप्त होगा। लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास भी इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण परिणाम होगा। विद्यार्थी समानता, न्याय, सहिष्णुता और बंधुत्व जैसे मूल्यों को व्यवहार में अपनाएँगे। इससे समाज अधिक संवेदनशील और संतुलित बनेगा। साथ ही, वैश्विक नागरिकता का विकास भी संभव होगा। विद्यार्थी अपनी स्थानीय पहचान के साथ-साथ वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करेंगे और विश्व स्तर पर सहयोग और शांति की दिशा में योगदान देंगे। यद्यपि विविधता में एकता के विकास की दिशा में कुछ चुनौतियाँ अवश्य हैं किंतु उचित योजना, प्रशिक्षण और सहयोग के माध्यम से इन्हें दूर किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक सशक्त मार्गदर्शन प्रदान करती है। यदि विद्यालय, शिक्षक, समुदाय और नीति निर्माता मिलकर कार्य करें तो शिक्षा प्रणाली ऐसी पीढ़ी तैयार कर सकती है जो विविधताओं का सम्मान करते हुए एक समरस, लोकतांत्रिक और समावेशी समाज

का निर्माण करे। यही विविधता में एकता की वास्तविक भावना है और यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दूरदर्शी सोच का उद्देश्य भी है।

निष्कर्ष- विविधता में एकता भारतीय समाज की मूल पहचान है और इसे सुदृढ़ बनाने में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक व्यापक और दूरदर्शी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जो शिक्षा को समावेशी, बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और बहुविषयक बनाकर विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता की भावना विकसित करने का प्रयास करती है। नीति के माध्यम से बहुभाषिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश, समावेशी शिक्षा, मूल्य आधारित अधिगम, स्थानीय से वैश्विक दृष्टिकोण तथा कला और संस्कृति का समावेश जैसे अनेक प्रावधान प्रस्तुत किए गए हैं जो विविधता को स्वीकार करते हुए एकता को मजबूत करने में सहायक हैं। विद्यालय इस प्रक्रिया के केंद्र हैं जहाँ विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थी एक साथ सीखते हैं और सहअस्तित्व का अनुभव करते हैं। बहुभाषिक कक्षा वातावरण, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, सहयोगात्मक अधिगम, अनुभवात्मक शिक्षण और समावेशी पाठ्यपुस्तकें इस दिशा में प्रभावी माध्यम बन सकती हैं। साथ ही शिक्षक की संवेदनशील और समावेशी भूमिका विद्यार्थियों में सम्मान, सहिष्णुता और सहयोग की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण है। यद्यपि बहुभाषिक शिक्षकों की कमी, संसाधनों का अभाव, क्षेत्रीय असमानताएँ और सांस्कृतिक पूर्वाग्रह जैसी चुनौतियाँ सामने आती हैं फिर भी उचित प्रशिक्षण, समावेशी पाठ्यक्रम और समुदाय की भागीदारी के माध्यम से इन चुनौतियों को दूर किया जा सकता है। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विविधता में एकता की भावना को सशक्त बनाने का प्रभावी मार्ग प्रदान करती है। इसके सफल क्रियान्वयन से ऐसे नागरिकों का निर्माण संभव होगा जो विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं का सम्मान करते हुए लोकतांत्रिक, समतामूलक और समावेशी समाज के निर्माण में सक्रिय योगदान दें। यही विविधता में एकता की वास्तविक भावना है और यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल उद्देश्य भी है।

सुझावित पठन/ संदर्भ

6. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
7. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2023). *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023*. एनसीईआरटी.
8. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2005). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005*. एनसीईआरटी.
9. शिक्षा मंत्रालय. (2021). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: कार्यान्वयन के लिए दिशानिर्देश*. भारत सरकार.

10. यूनेस्को. (2017). *शिक्षा में बहुभाषिकता और सांस्कृतिक विविधता*. यूनेस्को प्रकाशन.
11. कुमार, के. (2019). *भारतीय शिक्षा और संस्कृति*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान.
12. सिंह, एम. (2020). *समावेशी शिक्षा: सिद्धांत और व्यवहार*. नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग.
13. तिवारी, एस. (2021). *बहुसांस्कृतिक शिक्षा और राष्ट्रीय एकता*. लखनऊ: भारतीय प्रकाशन.
14. मोहंती, ए. (2019). *बहुभाषिक शिक्षा और अधिगम*. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन.
15. दीक्षित, ए. (2016). *शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.
16. कुमार, के. (2008). *शिक्षा, संस्कृति और समाज*. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन.
17. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. (2022). *समावेशी शिक्षा पर परिपत्र*. एनसीईआरटी.
18. MoE. (2020). *Samagra Shiksha Framework for Implementation*. Govt. of India.
19. MoE. (2022). *Foundational Literacy and Numeracy Mission Guidelines*. Govt. of India.
20. NCERT. (2022). *Multilingualism in education*. National Council of Educational Research and Training.
21. UNESCO.. (2015). *Education for Sustainable Development Goals: Learning Objectives*. UNESCO Publishing.
22. UNESCO. (2020). *Global citizenship education: Preparing learners for the challenges of the 21st century*. UNESCO Publishing.
23. <https://www.education.gov.in>